MSK- 006

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम संस्कृत

(एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम)

कार्यक्रम कोड : MSK

पाठ्यक्रम : भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

पाठ्यक्रम कोड : MSK-006

सत्रीय कार्य

जुलाई 2026 एवं जनवरी 2027 सत्रों के लिए

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

दिनांक : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अन्त में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढगं से व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जुलाई 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च 2027

जनवरी 2027 सत्र के लिए : 30 सितम्बर 2027

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम संस्कृत

(एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम)

कार्यक्रम कोड : MSK

पाठ्यक्रम कोड : MSK-006
पाठ्यक्रम : भाषा विज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन
सत्रीय कार्य – MSK-006/TMA/2026-2027

.

प्र.क .निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं सात (07) प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7×10

1 भाषाविज्ञान का महत्व, अंग ,और क्षेत्र पर लेख लिखिए ।

2. अर्थ परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए ।

3. स्वन, स्वनिम तथा सस्वन को स्पष्ट करते हुए इनके अन्तर भी लिखिए।

4. भाषाविज्ञान के उद्भव एवं विकास को समझाइए ।

5. पालि और प्राकृत भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

6. शब्द निर्माण पद्धति को उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

7. भारोपीय भाषा परिवार के वर्गो पर विस्तार से लेख लिखिए ।

8. प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं के वैशिष्ट्य को लेखबद्ध कीजिए।

9. ध्वनि परिवर्तन की दशाओं को स्पष्ट कीजिए।

प्र. ख निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 20

शिक्षायाः महत्वम्

अथवा

योगस्य महत्त्वम्

प्र. ग. निम्नलिखित में से किसी एक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए 10

क. अहमत्यन्त तुष्यामि त्वयि, यत्त्वमेकाकी अफजलखानस्य त्रीनश्वान् तेन दासीकृतान् पञ्चब्राह्मणतनयांश्च मोचचित्वा आनीतवानसीति। कथं न भवेरीदृशः ? कुलमेवेदृशं राजपुत्रदेशीयक्षत्रियाणाम्''। तावत् पुनरश्रूयतमर्मरः पादक्षेपश्च। ततो विरम्य, मुनिः स्वयमुत्थाय, प्रोच्चं शिलापीठमेकमारुह्य, निपुणतया परितः पश्यन्नपि कारणं किमपि नावलोकयामास चरणाक्षेपशब्दस्य। अतः पुनरेकतानेन निपुणं निरीक्षमाणेन गौरसिंहेन दृष्टम्, यत् कुटीर निकटस्थ निष्कुटक–कदलीकूटे द्वित्रास्तरवोऽतितरां कम्पन्ते इति।

अथवा

ख. इन्द्रियहरिणहारिणी च सतत–दुरन्ता इयमुपभोगमृगतृष्णिका। नवयौवन–कषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः पुरूषमत्यासंगो विषयेषु।

भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकर–गभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः। गुरुवचनम मलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरममुपजनयति। हरति च अतिमलिनमन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसयम निशाकर इव गुरुपदेशः ।